

“जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।”

आनन्दमय जीवन



पण्डित सेमिश्वर दत्त शुक्ल बी० ए० राचित



“अथ नाथ करि करुणा बिलोकहु देव यह वर मांगहु ।
जहि योनि जन्महु कर्मवश तहुं ‘देशहित’ अनुगहहु ॥”

अभ्युदय प्रेस, प्रयाग



सं० १६७०.